Student - Shashi Meshram
Date - 21/03/2022

43

प्रश्न संख्या 1 1

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

युद्ध : शांति की स्थापना या महाविनाश

अल्फ्रेड लॉर्ड टेनीसन अपनी कविता "द चार्ज ऑफ द लाइट ब्रिगेड" में एक युद्ध का बखान करते हैं। यह कविता बताती है कि एक 600 सैनिकों की टुकड़ी कैसे अपने कमांडर के मूर्खतापूर्ण आदेश के कारण मृत्यु के गाल में समा जाती है। युद्ध का यह दृश्य है 1854-1856 में हुए रूस और तुर्की के बीच हुए 'क्रीमिया के युद्ध' का। 'क्रीमिया का युद्ध' इतिहास में एक बहुत ही मूर्खतापूर्ण एवं अनिर्णायक युद्ध माना जाता है।

good introduction

अब प्रश्न उठता है कि क्या सभी युद्ध सर्वदा मूर्खतापूर्ण व विध्वंसक ही होते हैं या इनसे शांति की स्थापना भी की जा सकती है?

युद्ध, जिसका नाम सुनते ही आँखों के सामने भयानक दृश्य आने लगते हैं। आक्रामक सेनाएं, आक्रामक हथियार, युद्ध भूमि, तहस-नहस, और रक्त सिंचित भूमि। युद्ध हमेशा ही उत्तरदायी होते हैं सामूहिक विनाश के। एक ही बार में एक साथ असंख्य लोगों की जानें चली जाती है, आर्थिक हानि भी होती है सो अलग। तो क्या ये युद्ध हमेशा से ही मानव जाति और मानव इतिहास का हिस्सा रहे हैं?

इस्राईली - अमेरिकी लेखक 'युवल नोवा हरारी' अपनी किताब 'होमो-डेयस - द ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टुमारो' में बताते हैं कैसे 'युद्ध' मानव जीवन का भाग बना। इस किताब के अनुसार मानव जीवन अलग-अलग काल से गुजरा और उस काल की आवश्यकताओं के अनुरूप उसके जीवन में परिवर्तन आये। 'हरारी' ने इसे क्रमशः संज्ञानात्मक क्रांति, कृषि क्रांति और वैज्ञानिक क्रांति में विभाजित किया है।

संज्ञानात्मक क्रांति का आरंभ आज से 70,000 वर्ष पूर्व हुआ जब मनुष्य ने अपने मस्तिष्क का उपयोग करना शुरू किया। उसने अपने शिकारी-संग्राहक जीवनशैली में सुधार कर पशुओं को पालना और कृषि करना शुरू किया। यहाँ से कृषि क्रांति की शुरुआत हुई। जो कि आज से करीब 12,000 वर्ष पूर्व का समय था। तत्पश्चात वैज्ञानिक क्रांति अस्तित्व में आयी जिसने अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों को जन्म दिया जो आज से 500 वर्ष पूर्व शुरू हुई। इसी वैज्ञानिक क्रांति ने जन्म दिया 'औद्योगिक क्रांति' को। 17वीं सदी के मध्य के आसपास से मशीनों का उत्पादन में अत्यधिक प्रयोग होने लगा जिससे उत्पादन तो बढ़ा साथ ही अन्य कई चीजें भी। उदाहरण स्वरूप

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और उपभोक्तावाद। जिसने जन्म दिया मौलिक, राजनीतिक और नस्लीय टकराव को, जो आगे जाकर अलग-अलग युद्धों का कारण बना।

बढ़ते साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद ने विकसित या तुलनात्मक रूप से विकसित देशों को उत्साहित किया छोटे देशों पर अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिए। ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत ~~पर~~ को अपना उपनिवेश बनाया इसी का ही एक उदाहरण है। एक समय ऐसा आया जब पूरा विश्व ही कुछ मुट्ठी भर तुलनात्मक रूप से विकसित देशों का उपनिवेश था। इसने न सिर्फ देशों के अंदर युद्धों को अंजाम दिया बल्कि अलग-अलग देशों के बीच युद्ध करवाये प्लासी, बक्सर, आंग्ल-मराठा, आंग्ल-मैसूर इत्यादि इसी का उदाहरण है।

1789 के फ्रांसीसी पुनर्जागरण के बाद शुरू हुए नेपोलियन के युद्धों ने युद्धों का स्वरूप बदल दिया। जहाँ पहले कुछ सैनिकों की छोटी टुकड़ियों के साथ युद्ध लड़े जाते थे अब हजारों की संख्या में सैनिक युद्धभूमि पर आने लगे और ~~इस~~ इस प्रकार परिणामस्वरूप हजारों मौतें भी हुई।

नेपोलियन, बिस्मार्क, समुद्रगुप्त, अशोक इत्यादि जाने जाते हैं साम्राज्य का

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

एकीकरण करने के लिए पर किस मूल्य पर ? पूरी धरती को लाल रंग से रंगने के मूल्य पर ?

क्या युद्ध हमेशा विनाशकारी ही होते हैं ?

नोबेल पुरस्कार विजेता 'अमर्त्य सेन' अपनी किताब 'आइडेंटिटी एंड वॉयलेंस' के माध्यम से इस बात पर प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं। इस किताब के अनुसार, युद्ध और उसकी विध्वंसकता काफी हद तक निर्भर करती है 'आइडेंटिटी एंड वॉयलेंस' पर अर्थात् 'पहचान और उससे होने वाली हिंसा' पर। यह इस पर निर्भर करता है कि मनुष्य अपनी 'पहचान' के स्रोत का निर्धारण कैसे करते हैं। क्या इस पहचान स्रोत वे खुद हैं या फिर ये निर्भर है अन्य बाह्य स्रोतों पर। उदाहरण स्वरूप – धर्म, जाति, वर्ण, त्वचा का रंग, लिंग, भाषा, साहित्य, संगीत, मौलिक सिद्धांत, राजनीतिक विचारधारा, राष्ट्रीयता इत्यादि।

ये बाह्य स्रोत यदि किसी व्यक्ति या समूह विशेष की पहचान का मूल बिंदु हैं तो ये बाकी सारी मौलिक संभावनाओं को पीछे धकेलकर 'कट्टरवाद' में परिवर्तित होने लगती हैं।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

यही कट्टरवाद जन्म देता है धार्मिक और जातीय असहनशीलता को। यह आगे चलकर नफरत में बदल जाती है और फिर घृणा का रूप ले लेती है। घृणा यदि लंबे समय तक मनुष्य के मन हृदय में होती है तो यह अलग-अलग 'टकरावों' के रूप में सामने आने लगती है। जैसे राजनीतिक विचारधाराओं का टकराव, सांस्कृतिक और धार्मिक टकराव, भाषायी और क्षेत्रीय टकराव, लैंगिक टकराव इत्यादि। और यही टकराव छोटे दंगों का रूप ले लेते हैं जो ~~ही आगे जाकर इस~~ घृणा को और मजबूत करते हैं। और यही आगे जाकर अलग-अलग युद्धों का कारण बनते हैं।

दुर्योधन की पांडवों के लिए नफरत और घृणा, महाभारत के युद्ध में परिवर्तित हो गयी। हिटलर की यहूदियों के लिए घृणा ने यहूदियों के नरसंहार में परिवर्तित कर दिया।

ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत आने का कारण सिर्फ व्यापार करना या साम्राज्यवाद को बढ़ावा देना ही नहीं था, वरन् 'इस्लाम' के बढ़ते प्रभाव को भी रोकना या। ईसाई धर्म का प्रचार करना भी इसका एक उद्देश्य था जो कि धार्मिक-

कट्टरवाद, असहनशीलता और धार्मिक और व नस्लीय टकराव को ही दर्शाता है। और यही नस्लीय वरिष्ठता आगे जाकर 20वीं सदी के सबसे विध्वंसकारी दो युद्धों का भी कारण बनी।

विश्व युद्ध-1 और विश्व युद्ध-2 दोनों ने मानवजाति के अस्तित्व को झकझोर दिया। जहां विश्व-युद्ध-1 में लगभग पूरा विश्व ही शामिल होगया और जन-धन की अपार क्षति हुई, वहीं विश्व-युद्ध-2 ने सामूहिक विनाश के हथियारों का आगाज़ कर दिया।

विश्व-युद्ध-2 के आखिर में अमेरिका द्वारा किये जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु हमला कियागया यह परमाणु का पहला ही प्रयोग था जिसने मानवजाति को परमाणु शक्ति के विनाशकारी परिणामों से भयभीत कर दिया। साथ ही साथ यह भी संदेश दिया के युद्ध कितने विध्वंसक हो सकते हैं।

उसके बाद दौर शुरु हुआ 'शीत युद्ध' का। जहां अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूरे विश्व में पूंजीवाद की पताका लहरा रहा था, वहीं रूस 'साम्यवाद' का प्रचार-प्रसार कर रहा था

और इसी विचारधारा से उत्पन्न टकराव ने जन्म दिया शीत युद्ध को। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मात्र अमेरिका और रूस दोनों ने ही परमाणु हथियार विकसित कर लिए थे। और इस शीत युद्ध ने विश्व के अन्य देशों के मन में भय बैठा दिया अगले परमाणु युद्ध का। परन्तु 20वीं सदी के अंत तक यह शीत युद्ध समाप्त हो गया, पर तब तक अन्य कई देश भी परमाणु हथियार विकसित कर चुके थे।

~~'सैमुअल पी. हंटिंगटन'~~

21वीं सदी में युद्ध का परिदृश्य –

'सैमुअल पी. हंटिंगटन' अपनी किताब 'द क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन्स' में शीत युद्ध के बाद होने वाले युद्ध की संभावनाओं के बारे में लिखते हैं।
इस किताब के अनुसार, अब युद्ध केवल धार्मिक, जातीय, नस्लीय आधार पर नहीं होंगे, और ना ही ये केवल दो ताकतवर देशों या देशों के समूहों के बीच होंगे, वरन् सभ्यताओं के बीच होंगे।

शीत युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद जब बहुत सारे देशों के पास अपने ~~मिसाइल~~ विकसित किये हुये

परमाणु हथियार है, तो अब युद्ध और भी निर्दयी तथा और भी विनाशकारी होंगे।

परमाणु हथियारों की विनाशशीलता विश्व द्वितीय विश्व युद्ध में अनुभव कर चुका है। अब रासायनिक और जैविक हथियारों का युग है। जिनकी विनाशशीलता का मानवजाति ने अनुभव तो नहीं किया पर उसकी कल्पना अवश्य की जा सकती है। आगामी युद्ध और अधिक निर्दयी, भयावह, आक्रामक, और विनाशकारी सिद्ध होंगे।

युद्ध और शांति की स्थापना ←

मानव सभ्यता के इतिहास में मानवजाति ने असंख्य युद्ध देखे और उनके द्वारा हुई क्षति भी देखी। परन्तु क्या युद्ध हमेशा हानि ही करते हैं?

'श्रीमद् भगवद् गीता' में श्रीकृष्ण कहते हैं, "जब-जब धर्म की हानि होती है और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब धर्म की रक्षा, प्राणियों के उद्धार, और अधर्म का विनाश करने के लिए, मैं (श्रीकृष्ण) युगों-युगों तक प्रकट होता रहूँगा।"

गीता श्रीकृष्ण, कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुन को बताते हैं कि कैसे आवश्यकता पड़ने पर युद्ध करना पड़ता है।
कुरुक्षेत्र का युद्ध जो कि कौरवों और पांडवों के मध्य लड़ा गया, इसमें पांडवों की कौरवों के विरुद्ध विजय 'धर्म की अधर्म पर' अर्थात् 'अच्छाई की बुराई पर' विजय बतायी जाती है। अर्थात् अच्छाई की रक्षा के लिए युद्ध करना पड़ता है।

कलिंग युद्ध भी युद्ध की एक अलग पहलू दिखाता है। कलिंग युद्ध में हुए रक्तपात ने सम्राट अशोक का का ह्रदय परिवर्तन कर दिया। फलस्वरूप वे बौद्ध धर्म के अनुयायी बन गये। और उसका प्रचार-प्रसार भी किया। अशोक ने अपनी आक्रामक युद्ध नीति का त्याग कर शांति पूर्ण राज्य नीति अपनाई।

आधुनिक इतिहास में, 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के फलस्वरूप ही एक नये देश को स्वतंत्रता मिली और इस तरह 'बांग्लादेश' एक राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया।

can add subheadings regarding political, social, cultural, economic impact of wars

शीत युद्ध की समाप्ति के अंत तक सोवियत संघ टूटकर अलग-अलग नये देशों में बंटा। इस तरह कई नये राष्ट्रों का निर्माण हुआ जो पूर्णतः स्वतंत्र और संप्रभुत्व थे।

इस प्रकार देखा जाए तो युद्ध के विनाशकारी पहलू के अलावा एक दूसरा भी पहलू है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि युद्ध ने कई बार शांति स्थापना भी की है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांति व्यवस्था पूरे विश्व में बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र संगठन की स्थापना इस बात की पुष्टि करती है।

रूसी लेखक 'लियो टॉलस्टॉय' अपनी किताब 'वॉर एंड पीस' में युद्ध और इसके प्रभावों की बात करते हैं। टॉलस्टॉय बताते हैं कैसे 1812 में जब नेपोलियन की सेना रूस पर आक्रमण करती है तो कैसे इस युद्ध ने लोगों के पारिवारिक और सामाजिक जीवन को प्रभावित किया। अंत में लेखक बताते हैं कि कैसे 'पीस' अर्थात् 'शांति', 'युद्ध' से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

good structuring

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

भारतवर्ष सदियों से शांति का प्रचार-प्रसार करता आया है। वर्तमान हमारी विदेश नीति भी शांतिपूर्ण संबंधों पर आधारित है। भारतीय कानून का मूल स्रोत, भारतीय संविधान भी विश्व शांति एवं मित्रता की बात करता है। अनुच्छेद 51, राज्य के नीति निर्देशक तत्व के अंतर्गत विश्व शांति बनाए रखने उसके प्रचार, मैत्रीपूर्ण संबंधों और परस्पर मध्यस्थता के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों को सुलझाने की बात कही गयी है।

गौतम बुद्ध ने भी परस्पर प्रेम और अहिंसा की बात की है जो हमारी विदेश नीति का आधार है। यदि सभी देश अपने आपसी मतभेदों और स्वार्थों को भुला दें तो युद्ध जैसी स्थितियों को रोका जा सकता है और 'वसुधैव कुटुंबकम्' को भी चरितार्थ किया जा सकता है।

avoid overwriting

2½/2

add famous quotes by philosophers on war & peace

प्रश्न संख्या 2 3

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार

परिवर्तन ही प्रकृति का नियम।

यूनानी भूगोलवेत्ता 'हेराक्लिटस' ने ब्रह्मांड का अध्ययन किया। हेराक्लिटस ने पाया कि जबसे पृथ्वी अस्तित्व में आयी है तबसे निरंतर परिवर्तित ही हो रही है। और तब उसने यह कथन दिया, "संसार में एक ही चीज स्थायी है, वह है परिवर्तन और यही प्रकृति का नियम है।"

पृथ्वी की आयु 4.6 बिलियन वर्ष मानी जाती है। अपनी उत्पत्ति से लेकर अब तक पृथ्वी के आंतरिक तथा बाह्य स्वरूप में निरंतर परिवर्तन ही हो रहे हैं। इन्हीं आंतरिक और बाह्य परिवर्तनों के कारण ज्वालामुखी, पर्वत, नदियाँ, झरने, पठार, मैदान आदि स्थलाकृतियों का निर्माण हुआ।

इन्हीं पर्वतों के क्षरण से फिर मैदान बन गये, जो फिर कृषि हेतु उपयोग में लाये जाने लगे। नदियाँ हमारी जीवनदायिनी बनी। और फिर इन्हीं नदियों ने दूसरी स्थलाकृतियों का निर्माण किया। इस तरह निरंतर परिवर्तन होता गया।

सारी स्थलाकृतियाँ अपना रूप परिवर्तित करती रही। बस एक ही चीज स्थायी बनी रही, 'परिवर्तन'।

परिवर्तन - एक चक्र

पृथ्वी लाखों जीवों का घर है। यहाँ हर एक का जीवन किसी ना किसी प्राकृतिक चक्र का ही परिणाम है। और यह चक्र सदैव जारी होते रहने वाले परिवर्तन का परिणाम है।

पौधे सूर्य के प्रकाश में प्रकाश संश्लेषण करके अपना भोजन बनाते हैं और ऑक्सीजन त्यागते हैं। यही ऑक्सीजन मनुष्य और अन्य पशु-पक्षी ग्रहण करते हैं और कार्बन डाय ऑक्साइड त्यागते हैं। यह कार्बन डाय ऑक्साइड पुनः पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण में उपयोग की जाती है।

इसी प्रकार अन्य चक्र जैसे जल चक्र, नाइट्रोजन चक्र, कार्बन चक्र इत्यादि कार्य करते हैं।

यह सारी प्रक्रियाएँ निरंतर होती रहती हैं एक चक्र के रूप में ~~चलती~~ जो कि परिवर्तन का ही परिणाम है।

इसी प्रकार भी मनुष्य जीवन भी एक चक्र की भाँति कार्य करता है। पहले बाल्यावस्था, फिर युवावस्था और फिर वृद्धावस्था। उसके बाद मृत्यु के पश्चात मनुष्य का शरीर वापस मिट्टी का हिस्सा बन जाता है और यहीं उसी मिट्टी पेड़-पौधे उगते हैं। यही पेड़-पौधे मनुष्य के भोजन के रूप में ग्रहण किये जाते हैं और यह चक्र चलता रहता है।

परिवर्तन और मानव विकास

मानव सभ्यता का विकास भी परिवर्तन का परिणाम है। मनुष्य पहले जंगलों में पशु-पक्षियों के बीच रहा करता था। फिर उसने कृषि करना आरंभ किया और फिर समूहों में रहने लगा। इससे गाँवों का विकास। इसी प्रकार फिर शहरों और देशों का विकास हुआ।

'युवल नोवाह हरारी' अपनी किताब 'होमो सेपियंस - ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ ह्यूमनकाइंड' में बताते हैं कि कैसे

मनुष्य अपनी संज्ञानात्मक क्षमता का प्रयोग करते हुए बाकी प्रजातियों से आगे निकल गया।

फिर 17वीं सदी की औद्योगिक क्रांति ने मानव विकास की गति को और बढ़ा दिया। अब वह कार्य जो पहले मनुष्यों द्वारा किया जाता था मशीनों द्वारा किया जाने लगा। उत्पादन क्षमता के बढ़ने के साथ-साथ मनुष्य के जीवन स्तर में भी सुधार हुआ।

परिवर्तन और टेक्नोलॉजी

19वीं और 20वीं सदी में अभूतपूर्व तकनीकी विकास हुआ। इसने मानव की कार्य करने की क्षमता और कार्य प्रणाली दोनों को ही परिवर्तित कर दिया।

स्टीम इंजन का आविष्कार, रेलवे लाइन, टेलीफोन, हवाई जहाज आदि के आविष्कार ने क्रांति ला दी। उसके बाद कंप्यूटर के आविष्कार ने अकल्पनीय चीजों को वास्तविकता में परिवर्तित कर दिया।

21वी सदी के तकनीकी क्षेत्र में इस परिवर्तन और अधिक क्रांतिकारी सिद्ध हुए। अब रोबोटिक्स एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग है। अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से वे सारी असह असाध्य चीजें साध्य हो गयी हैं। इसने शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन, रक्षा एवं अंतरिक्ष क्षेत्र आदि क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं।

औद्योगिक क्रांति
कंप्यूटर की चोरी

अब जीनोम इंजिनियरिंग और डी.एन.ए. मैपिंग के जरिये की चिकित्सा पद्धति और भी अधिक प्रभावी हो गयी है।

ये सारे तकनीकी आविष्कार एक ही चीज का परिणाम है, जो है निरंतर अच्छा करने की इच्छा और निरंतर परिवर्तनशील रहने की चेष्टा।

परिवर्तन और नागरिक अधिकार

सदैव अच्छा प्राप्त करने की इच्छा ने ही मनुष्य को तकनीकी रूप से समृद्ध बनाया। इसीलिए इसी इच्छा ने

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

उसे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनने के लिए प्रेरित किया। अलग-अलग संस्कृति और सभ्यताओं के परिणामस्वरूप अलग-अलग देश बने। और उनके नागरिकों के अधिकारों का उद्भव हुआ।

इन्हीं अधिकारों को प्राप्त करने के लिए अनेक संघर्ष हुए जैसे अमेरिकी सिविल राइट्स मूवमेंट (1950s-60s) जहाँ मार्टिन लूथर किंग ने नेतृत्व किया। नस्लीय हिंसा के खिलाफ साउथ अफ्रीका में हुए एंटीअपारथाइड मूवमेंट जिसका नेल्सन मंडेला ने नेतृत्व किया। इसी प्रकार महिलाओं के वोटिंग सार्वभौमिक मतदान अधिकार के मूवमेंट और भारत में गाँधीजी के नेतृत्व में हुए अलग-अलग आंदोलन जैसे हरिजन आंदोलन, असहयोग आंदोलन, इत्यादि।

सामाजिक और राजनैतिक चेतना के आने से लोगों ने अपने अधिकारों के लिए मांग उठायी व उन्हें प्राप्त भी किया। जो भी एक परिवर्तन ही है।

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

इस प्रकार देखा जाए तो मानव जीवन का हर पहलू परिवर्तन का ही फल है। और भविष्य में भी यह परिवर्तन ही होगा जो कि स्थायी होगा सारी चीजें, और परिदृश्य चाहे आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, भौगोलिक समय के साथ परिवर्तित होते जायेंगे बस एक परिवर्तन ही स्थायी रहेगा। क्योंकि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है।

10

good presentation

इंदौर स्वच्छता पर प्रतिवेदन

इंदौर स्वच्छता पर प्रतिवेदन
दिनांक – / /

इंदौर शहर ने स्वच्छता सर्वेक्षण में पाँचवी बार प्रथम आकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। यह इंदौर नगरपालिका एवं इंदौर शहरवासियों के लिए काफी हर्ष की बात है। यह सफलता इंदौर नगरपालिका एवं शहवासियों के निरंतर एवं अथक प्रयासों का ही परिणाम है।

इंदौर पहले अन्य शहरों की तरह ही था। यहाँ वहाँ कचरे के ढेर दिखना एक सामान्य बात थी। परन्तु शहर के प्रशासन ने इस वक्तव्य को सुधार करने की प्रतिक्रिया की ओर जुट गया शहर की सफाई में।

इंदौर प्रशासन ने डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण की शुरुआत करी। फिर गीला और सूखा कचरा अलग-अलग करके संग्रहित किया जाने लगा। इसमें शहवासियों ने भी पूरा सहयोग दिया।

इंदौर प्रशासन के सफाई कर्मी या सफाई-मित्र ने इसमें बड़ी ही प्रशंसनीय

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

भूमिका निभायी। इन्होंने अलग-अलग दिन और रात की शिफ्टों में हर दिन काम किया और इंदौर को लगातार पाँचवी बार श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने में अपनी भूमिका निभायी।

इंदौर ने न सिर्फ कचरा संग्रहण में बल्कि उसके निस्तारण तक की भी पूरी व्यवस्था की। यहाँ कचरे को रिसायकल करने के लिए शहर के बाहर प्लांट बनाये गये जहाँ हर रोज कई टन कचरा रिसायकल किया जाता है। जो कंपोस्ट खाद बनाने में उपयोग किया जाता है।

इंदौर की स्वच्छता की सफलता में इसके रहवासी, सफाईकर्मी और इंदौर प्रशासन की भूमिका प्रशंसनीय रही।

इंदौर प्रशासन
दिनांक - / /

प्रश्न संख्या 3 2

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

जिलाधीश कार्यालय, उज्जैन
पत्रांक –
दिनांक –

कार्यालय आदेश

सामान्य जनों को सूचित किया जाता है कि आगामी कुछ ही दिनों में होली का त्योहार है। पिछले वर्ष कुछ दुकानों में होली के रंगों में हानिकारक तत्वों की मिलावट पायी गयी थी। इस बात को ध्यान में रखते हुए यह आदेश निर्गत किया जाता है कि यदि होली के रंगो की दुकानों पर हानिकारक रंग उत्पाद पाये गये तो ऐसे विक्रेताओं पर दंडात्मक कार्यवाही की जायेगी। हानिकारक रंगों का विक्रय अपराध है और एवं भारतीय कानून के अंतर्गत दण्डनीय है। जो भी विक्रेता ऐसे उत्पादों की बिक्री में लिप्त पाया गया उस पर भारतीय कानून संहिता, 1860 के अनुरूप दंडात्मक कार्यवाही की जायेगी।

हस्ताक्षर ——
(अ ब स)
जिलाधीश, उज्जैन